

1. कृषि का आरंभिक काल

भारत में कृषि का प्रारंभ नवपाषाण युग (लगभग 7000 ई.पू. – 3000 ई.पू.) में माना जाता है।

इस काल में मनुष्य ने शिकार और संग्रहण से हटकर अन्न उत्पादन शुरू किया।

सबसे प्राचीन कृषि के प्रमाण मेहरगढ़ (बलूचिस्तान, अब पाकिस्तान में) से प्राप्त हुए हैं।

यहाँ गेहूँ (wheat) और जौ (barley) की खेती के प्रमाण मिले हैं।

साथ ही पशुपालन (गाय, बकरी, भेड़) भी कृषि से जुड़ा हुआ था।

2. सिंधु घाटी सभ्यता (2600–1900 ई.पू.) में कृषि

सिंधु सभ्यता की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी।

यहाँ के लोग नदी की बाढ़ से मिलने वाली उपजाऊ मिट्टी में खेती करते थे।

मुख्य फसलें — गेहूँ, जौ, कपास, तिल, खजूर, चावल (लोथल व रंगपुर से प्रमाण)।

हल (plough) के प्रयोग का संकेत कालीबंगन (राजस्थान) से मिला है।

नहरों द्वारा सिंचाई के प्रमाण भी प्राप्त हुए हैं।

3. वैदिक काल (1500–600 ई.पू.) में कृषि

ऋग्वेद और अथर्ववेद में खेती और पशुपालन के कई संदर्भ मिलते हैं।

किसान को “कृषक” और हल को “सीर” कहा गया है।

मुख्य फसलें — जौ (यव), गेहूँ, धान, तिल, सरसों आदि।

इस काल में हल चलाने के लिए बैलों का उपयोग होता था।

भूमि को “उर्वरा” (फल देने वाली) और “क्षेत्र” कहा गया है।

4. उत्तर वैदिक और महाजनपद काल (600 ई.पू. – 300 ई.पू.)

इस काल में स्थायी कृषि व्यवस्था विकसित हुई।

बौद्ध और जैन ग्रंथों से कृषि कार्यों की स्पष्ट जानकारी मिलती है।

सिंचाई के लिए कूप, नहरें, तालाब और बाँध का उपयोग किया जाता था।

किसानों पर राज्य कर (भाग या भूमि कर) लगने लगा।

अर्थशास्त्र (कौटिल्य) में कृषि को राज्य की आर्थिक रीढ़ कहा गया है।

5. मौर्य और उत्तर-मौर्य काल (300 ई.पू. – 300 ई.)

मौर्य शासकों ने कृषि को संगठित रूप दिया।

मेगस्थनीज़ ने भारत को “धान्यप्रचुर देश” कहा है।

अर्थशास्त्र में कृषि विभाग (सामग्रहक) का उल्लेख है, जो भूमि, सिंचाई और कर का प्रबंध करता था।

सुदर्शन झील (गुजरात) जैसे बाँधों से सिंचाई की व्यवस्था का उदाहरण मिलता है।

6. कृषि का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व

कृषि से स्थायी ग्राम जीवन और जनसंख्या वृद्धि संभव हुई।

भूमि के स्वामित्व और कर व्यवस्था ने राज्य निर्माण की प्रक्रिया को जन्म दिया।

कृषि से जुड़ी त्योहारों की परंपरा (जैसे नवधान्य, ओणम, पोंगल, मकर संक्रांति) भी इसी काल में विकसित हुई।

✓ निष्कर्ष

प्राचीन भारत में कृषि का प्रारंभ नवपाषाण युग में हुआ और सिंधु घाटी सभ्यता से होते हुए वैदिक व मौर्य काल तक यह एक संगठित एवं वैज्ञानिक व्यवस्था बन गई। भारतीय समाज की आर्थिक नींव और सांस्कृतिक परंपराएँ इसी कृषि व्यवस्था पर आधारित रहीं।